एक बिगडैल लड़का जिसका गला बेहद सूख गया था

लेखनः इदरिस शाह

चित्रः सिलवारा कोसम

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

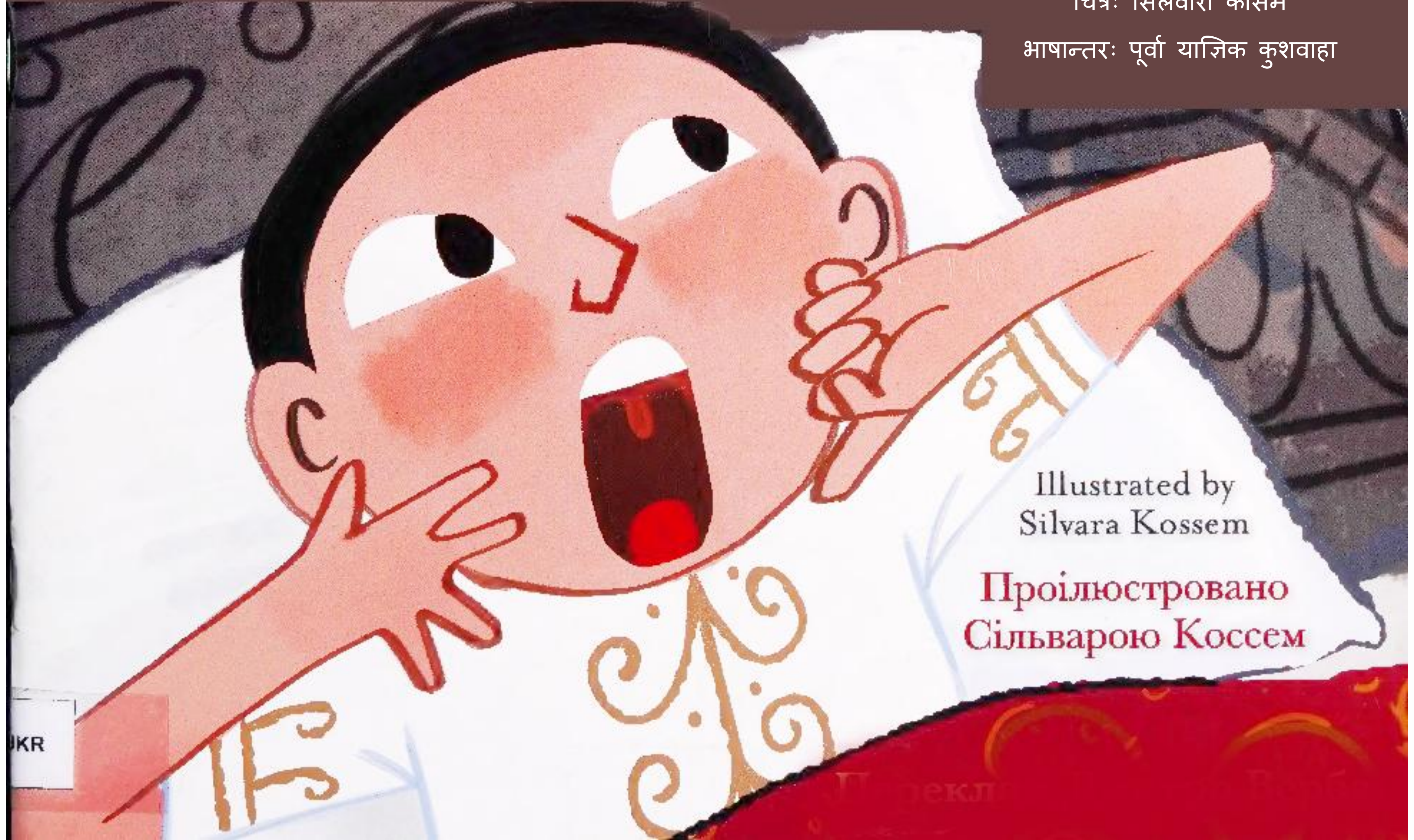

एक बिगडैल लड़का जिसका गला बेहद सूख गया था

लेखनः इदरिस शाह

चित्रः सिलवारा कोसम

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक बिगडैल लड़का जिसका गला बेहद सूख गया था

एक समय एक बेहद बिगडैल लड़का था, जो सुबह उठा तो उसे लगा कि उसका गला बेहद सूखा हुआ है।

उसे ऐसा लग रहा था मानों
उसने दुनिया भर के रेगिस्तानों
की रेत निगल ली है।

"मदद!" वह अपनी नाज़ुक आँखों को
सूरज की रोशनी से बचाने वाली रेशमी
पट्टी को उतारते हुए चीखा।

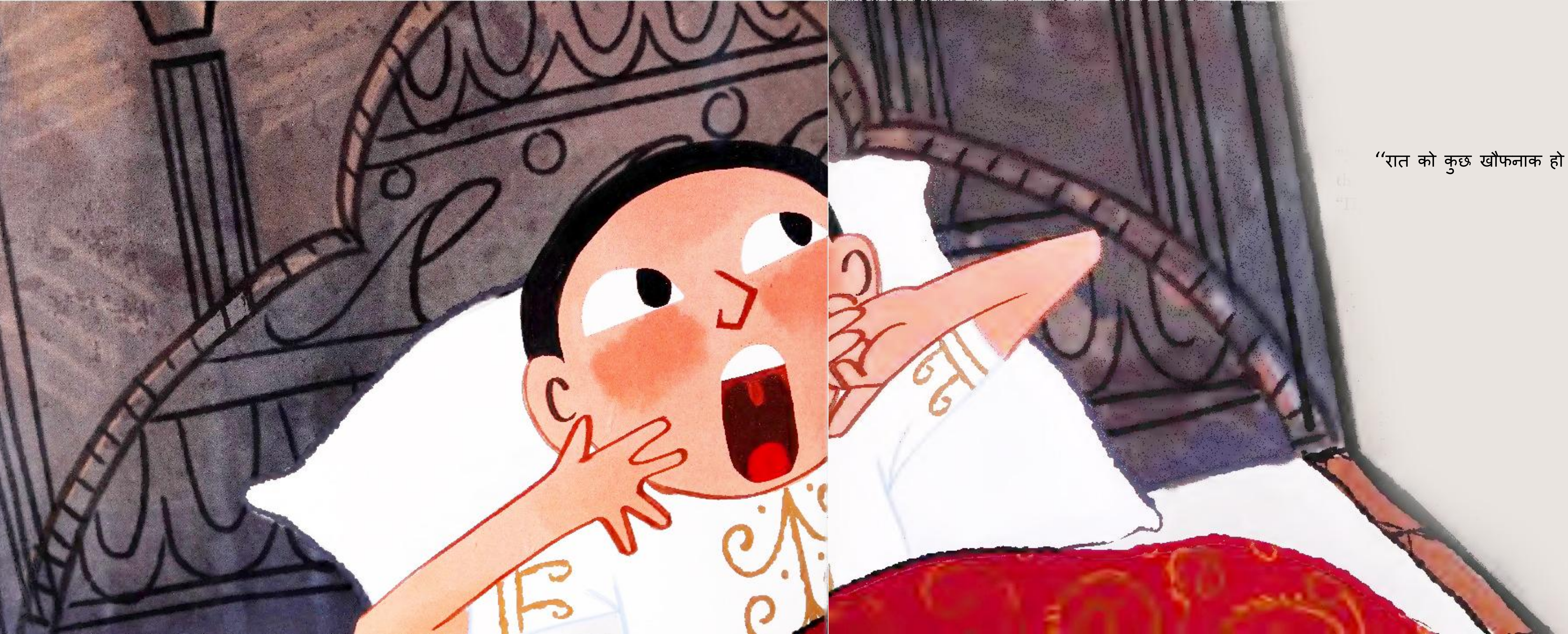

''रात को कुछ खौफनाक हो गया है।''

“और अब मेरा मुँह लगातार सूखता जा रहा है।”

उसके सेवादार घबरा कर इधर-उधर दौड़े . . .
वे अपने छोटे-से मालिक की तकलीफ दूर करने
का उपाय तलाशना चाह रहे थे।

कुछ देर में वे तेल लेकर लौटे।

लड़के ने बिना ना-नुकुर किए तेल पी लिया। उसके
गले का सूखापन जैसे अचानक गायब हो गया।

पर जल्द ही पता चला कि कुछ तो अब भी गड़बड़ है।

तेल ने उसके मुँह को अजीब-सा कर दिया।

"मेरी जीभ चिपचिपी लग रही है," वह तुतलाते हुए बोला।

"मुँह का स्वाद भी भयानक हो गया है।"

तब एक डॉक्टर बुलाया गया। वह हड़बड़ाता हुआ आया।
उसके साथ कई मेडिकल छात्र भी थे।

वे सब इस अनोखे और
चुनौती भरे मर्ज़ को
देखना-समझना चाहते थे।

मौके की गंभारता को देख और खुद
ध्यान का केन्द्र बनाने के लिए
डॉक्टर साहब और लम्बे लगना
चाहते थे। सो वे तन कर खड़े हुए।

डॉक्टर साहब ने बड़ी चुस्ती के साथ अचार
और सिरके का नुस्खा बताया। बेचारे मरीज़
ने बिना बहस किए यह सब भी निगला।

अब लड़के के अजीबो-गरीब लक्षणों में आँखों से बहता पानी और भारी पेट दर्द भी शामिल हो गए।

डॉक्टर साहब और उनके छात्र इस बात से हैरान थे कि लड़के का मर्ज़ इतने कम समय में किस कदर बढ़ गया है।

“मझे लगता है कि शायद मैं प्यासा हूँ,” लड़का भर्राई आवाज़ में बोला। वह इतनी तकलीफ में था कि वह खुद अपना दिमाग भी लगाने लगा था।

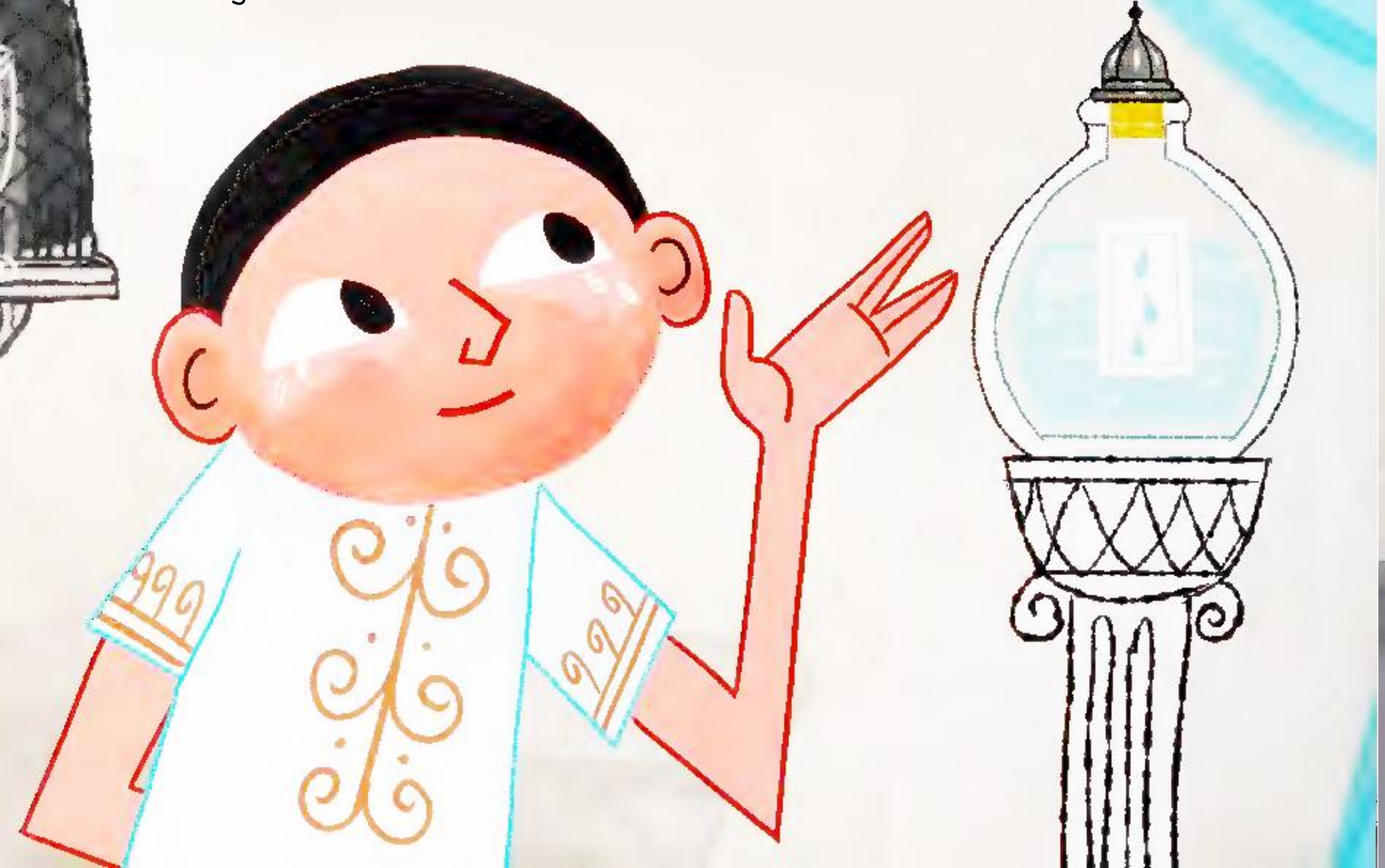

“बकवास!” डॉक्टर साहब भौंके।

“प्यास भला गले को कब से चिपचिपा बनाने लगी? उससे कब आँखों से पानी और पेट में जलन पैदा होने लगी?”

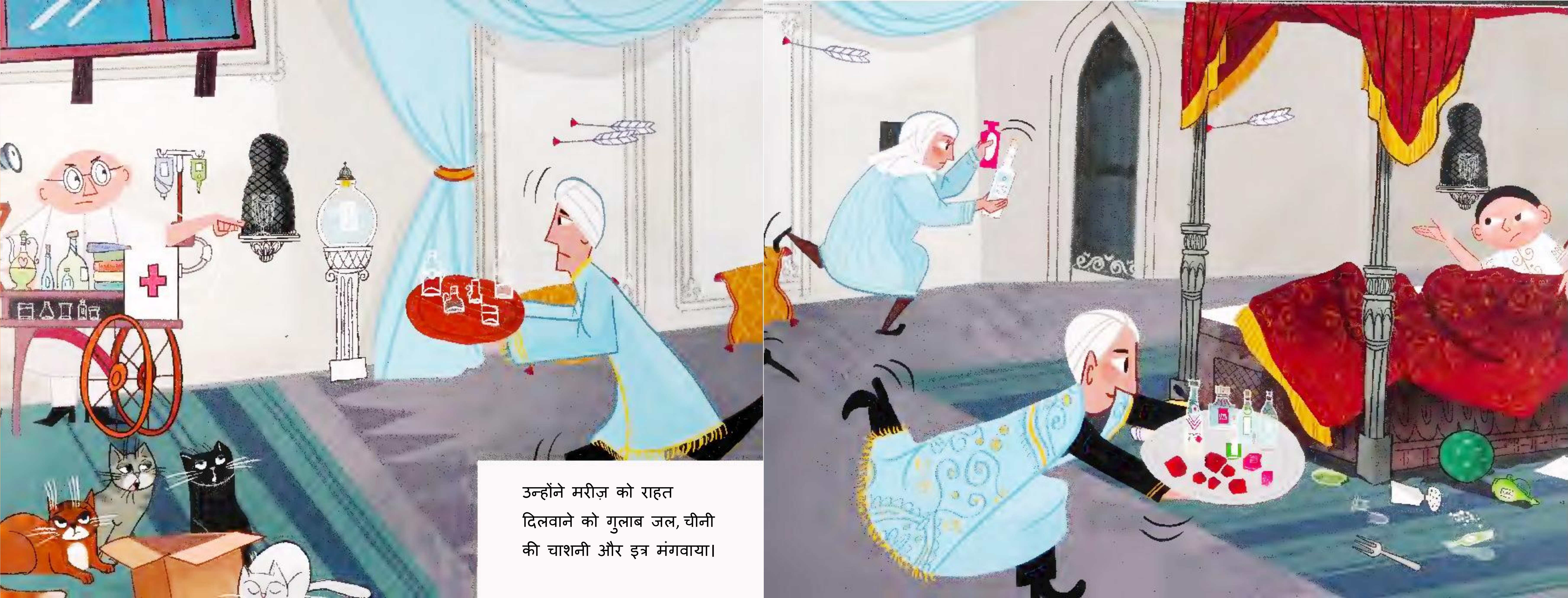

उन्होंने मरीज़ को राहत
दिलवाने को गुलाब जल, चीनी
की चाशनी और इत्र मंगवाया।

लड़के ने सब कुछ पिया। पर उसे रत्ती भर राहत न मिली। बल्की इन चीज़ों को पीने से उसका हाज़मा ही बिगड़ गया।

इधर रसोइदारिन थोड़ी और चाशनी लेकर लड़के के कमरे में आई। उसने लड़के को दर्द से फर्श पर दोहरा देख, कुछ कहने की हिम्मत जुटाई।

"मैंने अपने कई बच्चों को पाला-पोसा है," वह झिझकते हुए बोली। "मुझे लगता है कि छोटे-मालिक को शायद सिर्फ गिलास भर पानी की ज़रूरत है।"

कमरे में इकट्ठे सेवादारों और डॉक्टर ने उसे झिड़क दिया। वे बड़बड़ाने लगे कि हो सकता है उसके बच्चे ऐसे सरल इलाज से ठीक हो गए हों। पर छोटे-मालिक जैसी रुवाब-रसूख वाले मरीज़ को सादे पानी से कुछ बेहतर की ज़रूरत है।

अपनी तकलीफ से हैरान-परेशान लड़के ने भी रसोईदारिन की सलाह को नज़रअन्दाज़ किया।

''अपने बच्चों से मेरी तुलना कर तुमने मेरी तौहीन की है,'' वह भड़का।

''यह ज़ाहिर ही है कि मेरा हाज़मा साधारण बच्चों से कहीं पेचीदा होगा।''

''सच तो यह है कि रसोइदारिन का यह सोचना ही बदतमीज़ी है कि मेरा मर्ज़ सादे पानी से ठीक हो सकता है।''

इस तरह उस बिगडैल लड़के ने उस इकलौते इन्सान को खारिज कर दिया जो उसके गले की भयानक जलन का सही इलाज कर सकती थी।

पूरे घर-भर ने रसोइदारिन को निहायत बेवकूफ करार दिया।

और इस तरह डॉक्टर मशहूर हो गया।

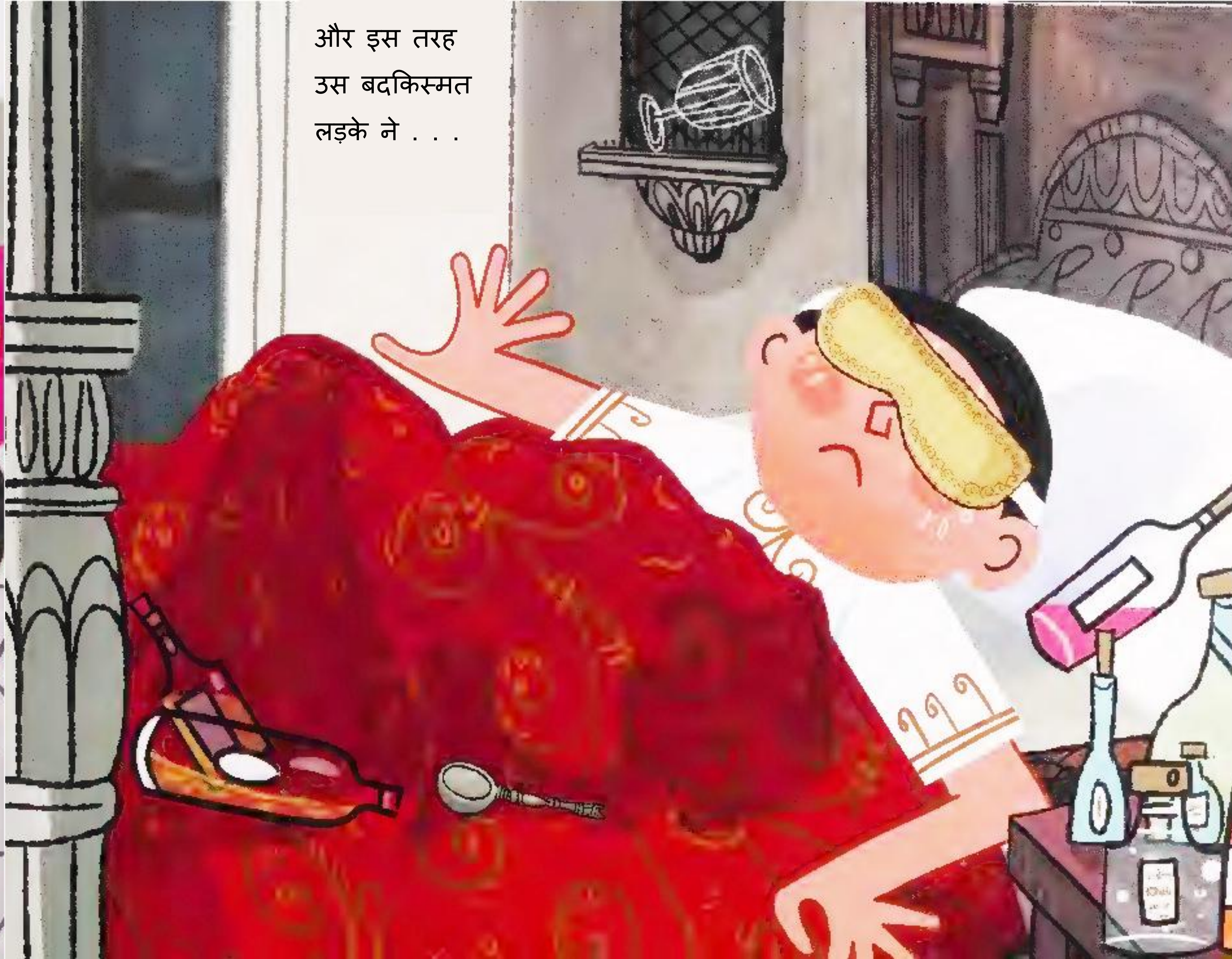

और इस तरह
उस बदकिस्मत
लड़के ने . . .

...अपनी पूरी ज़िन्दगी

...सूखे गले का मर्ज़ सहते हुए गुज़ारी।